International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 4; July 2017; Page No. 73-74

शैलेश मटियानी के कथा साहित्य में दलित चेतना

डॉ0 आनन्द सिंह फर्त्याल

प्रवक्ता–हिन्दी, राजकीय इण्टर कालेज, लालढ़ांग, हरिद्वार, उत्तराखण्ड, भारत।

प्रस्तावना

उत्तरांचल की इस पावन भूमि पर अनेकानेक महान् साहित्यकारों ने जन्म लिया जिन्होंने इस देव भूमि को ही नहीं, बल्कि देश को भी गौरवान्वित किया है। उन्हीं साहित्यकारों में एक नाम शैलेश मटियानी है। आपने हिन्दी जगत को लगभग 40 उपन्यास एवं 250 सशक्त कहानियाँ दी हैं। आपकी कहानियाँ कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की परम्परा को समृद्ध करती है। आपने उन्ही की तरह समाज के दबे–कुचले, शोषित, उपेक्षित तथा निम्नवर्ग के लोगों का जीवन चित्रण किया है। आपने अपनी कहानियों में समाज के जिन रूपों और घटनाओं पर लिखा है बहुत से लेखकों के लिए उसकी कल्पना करना भी कठिन है।

मटियानी जी दलित चेतना के साहित्यकार माने जाते हैं। आपने दलित चेतना पर अनेक मार्मिक उपन्यास एवं कहानियाँ लिखी हैं। आपने इस वर्ग की परेशानियों को अपने लेखन के माध्यम से उजागर किया है। आपने समाज में व्याप्त छुआ–छूत, अन्धविश्वास, रूढ़ियों, परम्पराओं एवं सामाजिक असमानता का बड़े साहस के साथ खुलकर विरोध किया है। 'सतजुतिया', 'बर्फ की चट्टानें', 'दुरगुली' 'आवरण', 'परिवर्तन', 'हत्यारे', 'भेड़ें और गड़ेरिये', 'नंगा', 'घुघुतिया त्यौहार', 'लीक' और 'प्रेतमुक्ति' आदि कहानियाँ एवं 'उत्तरकाण्ड' और 'नागवल्लरी' उपन्यास इसी परिपेक्ष्य में लिखे गए हैं। इन उपन्यास और कहानियों में दलितों के दबे–कुचले रोष और अपमान की दर्द भरी कथा का बखान है।

मटियानी जी की कथाओं में पर्वतीय सामाजिक व्यवस्था के यथार्थ दर्शन होते हैं। आपके अनेक उपन्यास एवं कहानियों में यहाँ का सामाजिक जीवन जीवन्त रूप में दिखाई पड़ता है। आपने अपने कथा साहित्य में पर्वतीय क्षेत्रों में व्याप्त जात–पात, ऊँच–नीच, छुआ–छूत, धार्मिक अन्धविश्वासों के साथ–साथ नारी शोषण और दलित उत्पीड़न जैसी अनेक समस्याओं को उजागर किया है।

दलित चेतना की दृष्टि से आपकी 'सतजुतिया' कहानी सबसे महत्वपूर्ण हैं। इस कहानी में वर्षों से उपेक्षित एवं शोषित दलित वर्ग की नई पीढ़ी में सामाजिक व्यवस्था के प्रति विद्रोह व्यक्त हुआ हैं। परम्पराओं में जकड़ा इस कहानी का पात्र हरराम अपने बेटे द्वारा मरी भैंस न खींचने को ब्रह्मदोष मानता हैं लेकिन उसके बेटे पररराम का अपना स्पष्ट मत हैं–

> ''सभी इस बात से सहमत थे कि जब अपना खून–पसीना निचोड़कर पेट पालते हैं, तो कम से कम इतनी तो आजादी तो होनी चाहिए कि जो काम रूचे करें। भैंसखोर मानकर, देह छूते ही सवर्ण उन्है दुराते थे। इससे इन सभी को ठेस पहुँचती थी, जिनके हरराम जैसे रूढ़ संस्कार नहीं''।[1]

मटियानी जी की अनेक कहानियाँ दलितों की मुक्ति एवं चेतना पर आधारित हैं । जो समाज में व्याप्त जातिगत भेद को दर्शाती हैं आपकी कथाओं के कई दलित पात्र इस सामाजिक व्यवस्था के प्रति विद्रोह करते दिखाई पड़ते हैं। आपकी कथाओं में इस वर्ग की बेबस लाचारी और आक्रोश को दर्शाया गया हैं। मटियानी जी का 'नागवल्लरी' उपन्यास जाति व्यवस्था पर आधारित हैं। इस उपन्यास में दलित वर्ग अपने पिछड़ेपन से चिन्तित हैं। लेखक ने इस उपन्यास के पात्र नारायण के मुख से दलित जागरूकता को उच्चारित करवाया हैं–

> ''जब तक हरिजन समाज अपने बीच से अपने नेता खुद पैदा नहीं करेगा, पिछड़ापन मिटाना मुश्किल ही रहेगा।''[2]

मटियानी जी संगठन की शक्ति में विश्वास रखते थे। आपका मानना था कि शोषित और दलितों का पिछड़ापन तभी दूर हो सकेगा जब वे संगठित हों। जब तक दलितों में नवीन चेतना और जागरूकता नहीं आती तब तक वे इस समस्या से ग्रसित रहेंगे। आपने अपने कथा साहित्य में दलित वर्ग से एकता का आह्वाहन किया हैं। इसी उपन्यास के पात्र जर्नादन के शब्दों में–

> ''महर्षि बाल्मीकी का नाम सुझाकर उन्होंने हरिजन एकता का आह्वाहन किया हैं। हरिजनों में ही टम्टा–लोहार, ओढ़–ढ़ोली, मोची–चमार, भंगी–कंजड जैसी फिरकापरस्ती की भावना रहेगी तो हरिजन एकता की बात करना व्यर्थ हैं।''[3]

कथाकार शैलेश मटियानी जी ने समाज में व्याप्त छुआ–छूत तथा ऊँच–नीच के घातक परिणामों को अच्छी तरह देखा हैं। आपने इस समस्या को अपने कथा साहित्य में मात्र चित्रित ही नहीं किया वरन् प्रगतिशीलता के आधार पर उसका सामाधान करने का प्रयास भी किया हैं। आपकी दृष्टि में समाज में व्याप्त यह भेद–भाव तब तक समाप्त नहीं होगा, जब तक कि दलित वर्ग संगठित नहीं होगा। दलित वर्ग की समस्याओं को उठाकर उनके समाधान का प्रयास करना और उनमें जागरूकता लाना यह मटियानी जी की कथाओं की विशेषता हैं। उक्त उपन्यास में आपने जो कुछ भी उद्धत किया वह सब आपकी अनुभूतियों से ओत–प्रोत हैं।

शैलेश मटियानी की 'आवरण' कहानी में भी दलित चेतना की अनुगूंज सुनाई पड़ती हैं। इस कहानी की पात्र दलित नारी रेवती को जब गैर दलित हरपाल द्वारा काश्तकारी से बेदखल किया जाता हैं तो उसके दलित बिरादरी के लोग विरोध करते नजर आते हैं–

> ''अब कोई विलायती वालों का राज नहीं हैं। जिस जमीन को रेवती बोती–बांटती आ रही हैं। उसे हरपाल नहीं छीन सकता।''[4]

मटियानी जी की ''परिवर्तन'' कहानी दलित चेतना के दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। इस कहानी के पात्र देवराम दलितों की उपेक्षा एवं अमानवीयता से त्रस्त एवं आक्रोशित हैं। उसमें इस व्यवस्था से बाहर निकलने की छटपटाहट हैं। वह अपनी बिरादरी के सामाजिक उत्थान के लिए चिन्तनशील दिखाई पड़ता हैं–

''लगभग चालीस–पैंतालीस वर्षों से इसी डुमौड़िया विमलकोट की धरती से लगा हुआ देवराम कभी–कभी बहुत दुखी और कुंठित हो उठता हैं कि ठाकुरों और ब्राह्मणों की तुलना में बहुत ही कठोर परिश्रम करने पर भी, उसकी जाति बिरादरी के लोगों को न तो आर्थिक सुविधाएँ हो पाती हैं और न सामाजिक क्षेत्र में ही उन लोगों को आदर मिल पाता हैं।''[5]

मटियानी जी की 'हत्यारे' कहानी में भी दलित चेतना को दर्शाया गया हैं। इस कहानी के पात्र हरफूल चन्द अपनी दलित बिरादरी के प्रति चिन्तित हैं। वह अपने बन्धुओं का जलसा कर उन्हें जागरूक करने के साथ–साथ उनसे क्रान्ति का आवाह्न करता हैं –

''तो मैं आप लोगों से क्या कह रहा था कि हम हरिजन भाईयों पर जोर–जुल्मों की हुकूमत चलाने के वे नादिरशाही जमाने गुजर चुके, जो हमारे बाप–दादाओं के पीठों पर अपने जालिम निशान छोड़ गए हैं।...अब वक्त आ गया हैं कि हम हरिजन दुनिया में अपने नामोनिशान छोड़ जाएँगे।''[6]

शैलेश मटियानी जी दलित समाज के पुरोधा समझे जाते हैं। आपने अपने कथा साहित्य के माध्यम से उनकी दीनहीन दशा को चित्रित किया हैं। आपने इन जातियों के शोषण, संघर्ष और दरिद्रता के वास्तविक चेहरे को समाज से परिचित कराया हैं। आपका अधिकांश साहित्य इन्हीं पर आधारित हैं। आपने अपने कथा साहित्य के माध्यम से इन्हें जागरूक करने का प्रयास किया हैं और आप इसमें सफल भी रहे हैं। आपकी कथाओं के दलित पात्रों में धीरे–धीरे सामाजिक चेतना आ रही हैं। वे अपने अधिकारों के प्रति सजग हो रहे हैं जिससे सामाजिक परिवर्तन अनेक स्थानों पर दिखाई पड़ रहा हैं। मटियानी जी की 'भेड़ें और गड़ेरिये' कहानी दलित चेतना पर आधारित सबसे उत्कृष्ट कहानी हैं। इस कहानी में दलितों में आयी राजनैतिक चेतना उद्घाटित होती हैं–

''अब हम तुम्हें वोट नहीं देंगे। पहले बताओ कि क्या कारण हैं, जो आजादी के बाद आप तो कारों में घूमते हैं, सतमंजिली हवेलियाँ खड़ी कर ली हैं, बड़े–बड़े ठेके ले लिए हैं और हम निरन्तर बेघर और बेरोजगार होते जा रहे हैं? क्या कारण हैं? कहाँ चली गयी वह आजादी, जो हमारे लिए आने वाली थी।''[7]

मटियानी जी की कथाओं के पात्र समाज में व्याप्त कुरीतियों से निकलकर समानता एवं समरूपता चाहते हैं। वे इन जातीय बन्धनों से निकल कर एक ऐसे नये समाज की स्थापना करना चाहते हैं जहाँ जाति जैसा कोई बन्धन न हो। वहाँ सब एक ही जाति के हों और वह जाति 'मानव जाति' कहलाए। आपका कथा साहित्य शोषण दमन और जातीयता के विरूद्ध हैं। आप समानता, समरसता एवं मानवता के पक्षधर हैं। आप समाज में फैले जातिगत द्वेष से खिन्न होकर तिलमिला उठते हैं। आपने अपने कथा साहित्य में जाति व्यवस्था को उद्धत कर नया वातावरण प्रतिस्थापित किया हैं। लेखक का मानना था कि समाज का उत्थान तभी सम्भव हैं जब जाति व्यवस्था के दंश को तोड़ा जाये।

मटियानी जी का कथा साहित्य मूलतः पिछड़े और वंचितों के जीवन से सम्बद्ध हैं। आपने समाज के हांसिए में रहे वर्षों से उपेक्षित एवं शोषित दलितो के जीवन का चित्रण किया हैं। समाज का दीन–हीन दलित वर्ग आपकी संवेदना का मुख्य आधार हैं। इस सम्बन्ध में श्री प्रकाश मनु का कथन सर्वथा उचित जान पड़ता हैं–

''दलितों और निचले वर्ग के लोगों से प्यार करने वाला उनसे बड़ा और कोई लेखक हमारे बीच हुआ ही नहीं। मटियानी का पूरा कथा साहित्य इस बात की गवाही देता हैं...यहाँ प्रेमचंद के बाद शैलेश मटियानी ही सबसे बड़े जनपक्षधर कथाकार साबित होते हैं''।[8]

मटियानी जी ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से समाज की यथार्थ झाकियाँ प्रस्तुत की हैं। आपकी कहानियों में शोषित–पीड़ित और दलितों की अर्न्तवेदना झलकती हैं। आपकी कहानियाँ जीवन की सच्चाई की तह तक पहुँचकर पाठक को वास्तविकता के दर्शन कराती हैं। आपने बड़े निर्भिकता और सच्चाई के साथ जैसा देखा, सुना और भोगा वैसा ही अपने साहित्य के माध्यम से समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया। अभाव, उपेक्षा और संघर्षों की आग में तपकर ही कोई साहित्यकार ऐसी जीवन्त कथाओं की रचना कर सकता हैं। वास्तव में आपका साहस अजेय हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग–3, पृष्ठ–455
2. 'नागवल्लरी'– शैलेश मटियानी पृष्ठ–26
3. 'नागवल्लरी'– शैलेश मटियानी पृष्ठ–42
4. शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग–1, पृष्ठ–351
5. तीसरा सुख –शैलेश मटियानी पृष्ठ–47
6. 'हत्यारे'– शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग–3, पृष्ठ–168
7. 'भेंड़ें और गडरिये'–शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग–3, पृष्ठ–229
8. आजकल, अक्टूबर, 2011